

एक जयनाम धारणी

II-289

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

॥ ॥ ॐ नमो रगवतो श्रार्य उग्रता नाथे ॥ नमो कजटा दयो ॥ नमो वृद्ध धर्म संधत्य ॥ ॥

॥ ॥ नमो सर्वभूवक प्रत्येक वृद्ध वाधिसत्त्वकाधना ऊस्य ॥ नमो रगवतो पत्रमगुनव
महाकात्रुहिकाय ॥ क मूनयनथा गता याह न स म क वृद्धाय ॥ गद्यथा ॥ ॐ उग्र
महालय उग्र रूप उग्रता न ॥ ॐ क्रीं कृं न क जट पिंगला लोक जट उर्ध्व जट चन्द्र खीं कि
न जट यो मवडा हा सिगम कूट ॥ न न गि ना मधुमाला र न हा र्द द्या क नाला य हरी

॥ १ ॥

यहा दर्शन र कृटि मूखी ॥ महामूखी ॥ हस २ म द २ म द ना त्सूक ॥ म द ना त प २ कूल ग्व
त्रि ॥ कूल सूरि द नि कूल मा न नि ॥ कूल कलि नि ॥ ज म २ सू न न सू न ना त्सूक ॥ सू न न ग्व नि
विक्र न दं द्यु म ना स्प वालं ड का टि मं का ठा द म न ॥ विशू किं क ॥ लाल न म न ॥ सै ग्रा सि
न र व न ॥ विक जालि ॥ सै का नि ॥ महा कं कालि काला न ल काल ना ह नि ॥ काल कं
काल ॥ विध म नि व कृ महा काल रूप धा न हि ॥ महा कालि काली ठा द म नि ॥ व नालि

॥ ३५ ॥

॥ २ ॥

वक्रवंगालि पद्मवंगालि वंगालास्थपनि वंगालकलिप्रियमहाठमठमनवासि
नि महाकापालिनि महाकालकपालधनि विमिमांसा विमिमांसा विमिमांसा विमिमांसा
नृषीप्रप्रावृणशीन ननगिनमूठमालावलम्बितदंष्ट्रावासन कर्णगासन क
तान्ककाविहि कर्णगमधनि कर्णान्कदंष्ट्र महाकालिकालीठाधमनि कालभा
हनि महाकालकीकालविधमनि वक्रमहाकालनूपधानिहि हाहाहीहीह्रीह्री

॥ २ ॥

हृहृहृहृ गृहृ २ गृहृ २ खट २ घट २ विघट २ गट २ नट २ वट २ मट २ वंगाल
मध्यवर्त्तिनि कालिक २ कालिगठिख प्रकालिगमृगु २ प्रकालिगकृगवहनयन
काल २ कालय २ वक्र २ वक्रगर्ह वक्रकालानलप्रह वक्रकालागर्ह वक्रकाला
मधुल नारिकाठामध्यगण वक्रकालावरासितगानीय वक्रदंष्ट्र वक्रवठ
वक्रवाजाहि नृषाविद्वययकलि महाकालीठादमनि दह २ हस्मीकृ २ सर्ववि

॥३५॥

॥३॥

घान् वज्रवत् कुमानि बहु । अजितं अपत्राजितं । अमितं अपत्रमितं । अयनिमित्तं
पू । एध हान सैला प्रापचितं । असम् । असमन्तकं । ग्रस २ मर्द २ मथ २ प्रम । थव नि
अप्रतिहृतं महाविद्य । मध्वर्त्तिनि । अकलनिष्कलं बहुकलं कलनातीतं । अमृ
तं । अमृताद्भुतं । अमृतगन्धिनि । वज्रासृगं । अमृतवर्षाणि । अमृतप्लवः । कलुलितं
अवधूतं । अवधूतनिवासिनि । अवधूतरज्जिनि । विदनादधमनि । धम २ नक्ष २

॥३॥

ॐ नमो मंशानुसानि । एधे । द्वाधिष्ठानता वृद्धाः । रयदा रयनामिनी । रवीर्बुद्धिनिमग्ननी
नमो मंशानुसानि । १ । मंशानुसानि । धलाकां । नान्यं मंशादयाग्रहाः । पीठयं प्रिया
ध्वनिः । नमो मंशानुसानि । २ । यन्मंशानुसानि । दधवः । षडी गयः । सुदानुसः । ननु सु
मासी वनवः । नमो मंशानुसानि । ३ । द्वाध्यायरावकाथका । यन्मंशकथनां ननं । या
हिः सर्वद्रुस्त्वस्ति स्या । नमो मंशानुसानि । ४ । कलोर्बुद्धविहीनस्मिन् । लोकानां हिन

॥ ४॥

॥ ३॥

मावत्रत् ॥ पायात्यातप्रथमनीनममंशानुमानिशी ॥ ५ ॥ ॐ भिमंशानुमानिशी ॥ ६ ॥
माफै ॥ ॥ ॐ नमो महाश्री गवतये ॥ यद्वा नदी मन्त्र ऊपन् नाद्रुला रुद्र माफवान् ॥ वि
हठि नाग्रहेः सर्वैः श्री गवती नमाम्यहं ॥ १ ॥ पापनाथ श्री गवती श्री गलायुपसर्ग
नः ॥ श्री गलायुदः स्वष्टा मनी श्री गवती नमाम्यहं ॥ २ ॥ मंयग्रथिगस्तु शास्त्री धनद्वार
स्वकथाऊनं ॥ पथिकानां पालयंती श्री गवती नमाम्यहं ॥ ३ ॥ ॐ नमो नमस्तु नमः

॥ ३॥

II-289

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

कीलय २ सर्वग्रहान् माहय २ सर्वरुगान् ॥ शासय २ सर्वयज्ञाऊसान् ॥ रुव
गवति महाकनका ॥ ६ ॥ ॐ नमो श्री गवती नमस्तु ॥ ७ ॥ ॐ नमो श्री गवती नमस्तु ॥ ८ ॥
महामहि चिंतामहि ॥ महिधनि ॥ महियय ॥ यद्ममहिवन्द्य वदमहि वज्रक
र्तुनि ॥ वज्रऊकिनि ॥ वज्रऊकिनि रुद्रयान्मूलनि ॥ महाकृष्ण किंकिनि ॥ र्वि
खिनि ॥ बाघचर्मकादिरुद्रयम ॥ महाक्रोधनाऊ ॥ मूद्रारुविनचनधायू

॥ उग्र ॥

॥ ५ ॥

गले (ग) धा सार न हना गभृ क रु हि म हि न श्रि ग ग नी न रु व ध ल क र वि य
रु रु ३ सि ३ ठा त सह स्वा ति य क प्र रा व रा सि क ये धा रु क सू न ठा त म कू ट म हि मा
ला प नि चू मि रु पा द पी ७ वि ठ व मा रु व कू न्द्र न्द्रा क र्ष हि रु का न पू न हि ये धा
गु क व ठा क त्रि ये ला क्का क र्ष हि सर्व त थ ग त गु क द द य म हा मू द्रा धि धि रु म
हा पा य म हा मा य मा या वि भा ह्नि मा या जाल न य ॥ चल २ वि चल २ सं च न २ ये

॥ ५ ॥

भा रु क न म स्तू रं न वि ठा शि रु क व रु न य न म हा क ल्पा ग्नि स न्नि रु वी न २
वी न ठा व ल्ल रु वी न ठा न मि रु प न म ह्यु ल मू द्रा रु नि रु ४ रु वे हा ॥ व रु
कू ठा धा त्रि ही पा ठा स्था ट नि प्रि थ व रु प द्म म हा मू र्ख म हा व रु ध न स्तू
पि हि ध र्म धा रु स्त न ग र्ह न म २ स र्व या गि नी म ह्यु ल पू जि रु का नू र्ध्वा मू र्क
नि रु न चै र्ज ग मा लि नि वि श्व रु वि ठ वी रु ग र्ह ति ल य च न्द्र २ च न्द्रा व रु

॥ ३५ ॥

॥ ६ ॥

स्थितमस्तकचन्द्रमधुलमध्यगर्तगतञ्जुनलञ्जुनदयसन्निह ॥ अञ्जुम
धुलानुरुहलितानलरुजसकालनाशीसर्वविघ्नविध्वंसनि ॥ हा॥ हा॥ अञ्जु
यविद्यागर्तमहासर्वमधुलपूजितमहाकान्तलिकरकानुवत्सलमहामंश
नसानिहितमहामंशगर्तसर्वमंशमूडाविद्यातत्त्वार्थसंजननि ॥ चतुस्तोपद
शकानिहितमहामंशकृतसहस्राक्षसहस्रतूजशतसहस्राक्षि ॥ माहय २

॥ ६ ॥

स्वाहा ॥ ज्ञानामृतसमूहमस्वाहा ॥ धर्मधनुगर्तस्वाहा ॥ महाबाधिविघ्नवक्रस्वा
हा ॥ महासमयस्वाहा ॥ प्रेलाकधमनिस्वाहा ॥ महासाहस्रप्रमर्दनीस्वाहा ॥ रु॥
स्वाहा ॥ शुव॥ स्वाहा ॥ स्व॥ स्वाहा ॥ रु॥ रु॥ वः स्वाहा ॥ वक्रवात्राहीस्वाहा ॥ वक्रनात्रस्वा
हा ॥ सर्वमंशलविद्याधिपतयस्वाहा ॥ पंचनआयेस्वाहा ॥ समाठमसकनीस्वाहा
अष्टयप्रदस्वाहा ॥ नकुशमीसर्वसत्त्व ॥ अष्टयसर्वरुद्रप्रतपिठ ॥ चडाकजकिन्म

॥ उय ॥

॥ ७ ॥

पस्मा जल यल्यः सर्वं यत् सर्वं दामम सर्वं सत्त्वानां च ॥ किं कृत् प्रसिद्धं कृत् न जी-
कृत् न रजवति विंगलायैक जटुं ३ रुट् ३ नमा सुत स्वाहा ॥ ॐ श्रीः ॥ कीं कीं
रु ॥ ॥ ॐ मि उय ता ना प्रक जटाना मधा जही स माफा ॥ ॥ यधर्मा हनु ॥ ७ ॥
प्रल वा रु सु रु सां र था ग तः ॥ कव द रु यी च या नि ना ध उ वं वा दी महा ध मलः ॥ ॥
सर्व तू १० १३ खाला हा धृदि १५ ना १ महा वृद्ध या जिन नान नून चा या कल धु र